श्री बृहत् महा-सिद्ध कुञ्जिका स्तोत्रम्

• 'कुल-वाणी-रत्न' पं० ओङ्कारनाथ शुक्ल, जैतहरी, शहडोल (म.प्र.)

[यह 'कुञ्जिका-स्तोत्र' मुझे 'अमरकण्टक' में एक अवधूत साधु की कृपा से प्राप्त हुआ। मैं वहाँ 'सप्तशती-पाठ' करता था। उन्होंने मेरे पास आकर मुझे इस स्तोत्र की प्रतिलिपि करने की अनुमति दी थी। अस्तु, जन-हिताय प्रस्तुत है। कोई भी दीक्षा-प्राप्त व्यक्ति इसका पाठ करने का अधिकारी है। निरन्तर 'सप्तशती' का पाठ करनेवाला माँ जगज्जननी का भक्त सप्तशती के आरम्भ और अन्त में इसका पाठ अवश्य करे। 'कुल्लुका महा-मन्त्र' के सम्बन्ध में अवधूत संन्यासी जी ने यह सङ्केत मात्र दिया था— 'काली-कूर्च-वधू-माया-ताड़क-बीज-समन्विता' अर्थात् 'क्रीं हूं स्त्रीं ह्रीं फट्'— इन ५ बीजों से जप के पूर्व कर - न्यास व हृदय - न्यास करने चाहिए। — प्रस्तुत - कर्ता]

नमो देव्यै महा-देव्यै, शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै, नियताः प्रणताः स्म ताम्।।

।।ध्यानम्।।

ॐ विद्युद्-दाम-सम-प्रभां मृग-पति-स्कन्ध-स्थितां भीषणाम्।
कन्याभिः करवाल-खेट-विलसद्-हस्ताभिरासेविताम्।।
हस्तैश्चक्र-गदाऽसि-खेट-विशिखांश्चापं गुणं तर्जनीम्।
बिभ्राणामनलात्मिकां शशि-धरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे।।

।।शिव उवाच।।

शृणु देवि! प्रवक्ष्यामि, कुञ्जिका - स्तोत्रमुत्तमम्। येन मन्त्र - प्रभावेण, चण्डी-जापः शुभो भवेत्।।१।।
न कवचं नार्गला तु, कीलकं न रहस्यकम्। न सूक्तं नापि ध्यानं च, न न्यासं न च वाऽर्चनम्।।२।।
कुञ्जिका-पाठ-मात्रेण, दुर्गा-पाठ-फलं लभेत्। अति गुह्य-तरं देवि! देवानामपि दुर्लभम्।।३।।
गोपनीयं प्रयत्नेन, स्व-योनिरिव पार्वति! मारणं मोहनं वश्यं, स्तम्भनोच्चाटनादिकम्।
पाठ-मात्रेण संसिद्ध्येत्, कुञ्जिका-स्तोत्रमुत्तमम्।।४।।

ॐ श्रूं श्रूं श्रूं श्रं फट् ऐं ह्रीं क्लीं ज्वलोज्ज्वल, प्रज्वल, ह्रीं ह्रीं क्लीं स्रावय स्रावय।
वशिष्ठ-गौतम-विश्वामित्र-दक्ष-प्रजापति-ब्रह्मा ऋषयः। सर्वैश्वर्य-कारिणी श्री दुर्गा देवता।

गायत्र्या शापानुग्रह कुरु-कुरु हूं फट्।

ॐ हीं श्रीं हूं दुर्गायै सर्वैश्वर्य - कारिण्यै, ब्रह्म-शाप-विमुक्ता भव।।

ॐ क्लीं हीं ॐ नमः शिवायै आनन्द-कवच-रूपिण्यै ब्रह्म-शाप-विमुक्ता भव।

ॐ काल्यै काली हीं फट् स्वाहायै, ऋग्वेद- रूपिण्यै ब्रह्म-शाप-विमुक्ता भव।।

शापं नाशय नाशय, हूं फट्।। श्रीं श्रीं श्रीं जूं सः आदाय स्वाहा।।

ॐ श्लों हुं क्लीं ग्लौं जूं सः ज्वलोज्वल मन्त्र प्रबल हं सं लं क्षं स्वाहा।

नमस्ते रुद्र-रूपायै, नमस्ते मधु-मर्दनी नमस्ते, कैटभारी च नमस्ते महिषार्दिनी।। नमस्ते शुम्भ-हन्त्री च, निशुम्भासुर-घातिनी। नमस्ते जाग्रते देवि! जप-सिद्धिं कुरुष्व मे।। ॐ ऐङ्कारी सृष्टि-रूपायै, ह्रीङ्कारी प्रति-पालिका।। क्लीङ्कारी काल-रूपिण्यै, बीज-रूपे! नमोऽस्तु ते। चामुण्डा चण्ड-घाती च, यैङ्कारी वर-दायिनी। विच्चे त्व-भयदा नित्यं, नमस्ते मन्त्र - रूपिणी।। ॐ ऐं हीं श्रीं हंसः-सोऽहं अं आं ब्रह्म-ग्रन्थि भेदय भेदय। इं ई विष्णु-ग्रन्थि भेदय भेदय। उं ऊं रुद्र-ग्रन्थि भेदय भेदय। अं क्रीं, आं क्रीं, इं क्रीं, इं हूं, उं हूं, ऊं हीं, ऋं हीं, ॠं दं, लृं क्षिं, लॄं णें, एं कां, ऐं लिं, ओं कें, औं क्रीं, अं क्रीं, अः क्रीं, अं हूं, आं हूं, इं हीं, ईं हीं, उं स्वां, ऊं हां, यं हूं, रं हूं, लं मं, वं हां, शं कां, षं लं, सं प्रं, हं सीं, ळं दं, क्षं प्रं, यं सीं, रं दं, लं हीं, वं हीं, शं स्वां, षं हां, सं हं लं क्षं।।

महा-काल-भैरवी महा-काल-रूपिणी क्रीं अनिरुद्ध-सरस्वति! हूं हूं, ब्रह्म-गृह-बन्धिनी, विष्णु-ग्रह-बन्धिनी, रुद्र-ग्रह-बन्धिनी, गोचर-ग्रह-बन्धिनी, आधि-व्याधि-ग्रह-बन्धिनी, सर्व-दुष्ट-ग्रह-बन्धिनी, सर्व-दानव-ग्रह-बन्धिनी, सर्व-देवता-ग्रह-बन्धिनी, सर्वगोत्र-देवता-ग्रह-बन्धिननी, सर्व-ग्रहोपग्रह-बन्धिनी! ॐ ऐं हीं श्रीं ॐ क्रीं हूं हीं मम पुत्रान् रक्ष रक्ष, ममोपरि दुष्ट - बुद्धिं दुष्ट - प्रयोगान् कुर्वन्ति, कारयन्ति, करिष्यन्ति, तान् हन। मम मन्त्र - सिद्धिं कुरु कुरु। मम दुष्टं विदारय विदारय। दारिद्र्यं हन हन। पापं मथ मथ। आरोग्यं कुरु कुरु। आत्म-तत्त्वं देहि देहि। हंसः सोहम्। क्रीं क्रीं हूं हूं हीं हीं स्वाहा।।

नव - कोटि - स्वरूपे, आद्ये, आदि - आद्ये अनिरुद्ध-सरस्वति! स्वात्म-चैतन्यं देहि देहि। मम हृदये तिष्ठ तिष्ठ। मम मनोरथं कुरु कुरु स्वाहा।। धां धीं धूं धूर्जटेः पत्नि! वां वीं वागीश्वरि तथा।। क्रां क्रीं क्रूं कुब्जिका - देवि! शां शीं शूं मे शुभं कुरु।।

हूं हूं हूङ्कार-रूपायै, जां जीं जूं भाल-नादिनीं। भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरवीं भद्रे भवान्यै ते नमो नमः। ॐ अं कं चं टं तं पं सां विदुरां विदुरां, विमर्दय विमर्दय हीं क्षां क्षीं क्षीं जीवय जीवय, त्रोटय त्रोटय, जम्भय जम्भय, दीपय दीपय, मोचय मोचय, हूं फट्, जां वौषट्, ऐं हीं क्लीं रञ्जय रञ्जय, सञ्जय सञ्जय, गुञ्जय गुञ्जय, बन्धय बन्धय। भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरवी - भद्रे! संकुच संकुच, सञ्चल सञ्चल, त्रोटय त्रोटय, म्लीं स्वाहा।। पां पीं पूं पार्वती पूर्णा, खां खीं खूं खेचरी तथा। म्लां म्लीं म्लूं मूल - विस्तीर्णा-कुब्जिकायै नमो नमः।। सां सीं सूं सप्तसती - देव्या मन्त्र-सिद्धिं कुरुष्व मे।।

इदं तु कुब्जिका-स्तोत्रं, मन्त्रा-जागृति-हेतवे।। अभक्ते न च दातव्यं, गोपितं रक्ष पार्वति! विहीना कुब्जिका-देव्या, यस्तु सप्तशतीं पठेत्। न तस्य जायते सिद्धिः, ह्यरण्ये रुदतिं यथा।।

।।इति श्रीरुद्र-यामले, गौरी-तन्त्रे, काली-तन्त्रे शिव-पार्वती-सम्वादे, कुब्जिका-स्तोत्रम्। ॐ ॐ तत्सत् श्रीजगज्जननी-चरण- कमलार्पणमस्तु।